धूल लेखक –रामविलास शर्मा

रामविलास शर्मा

उन्नाव जिला के ऊँचगाँव सानी में जन्मे डॉ॰ रामविलास शर्मा ने लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम.ए. तथा पी-एच.डी. की उपाधि सन् १९३८ में प्राप्त की। सन् १९३८ से ही आप अध्यापन क्षेत्र में आ गए। १९४३ से १९७४ तक आपने बलवंत राजपूत कालेज, आगरा में अंग्रेजी विभाग में कार्य किया और अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष रहे डॉ॰ रामविलास शर्मा का साहित्यिक जीवन का आरंभ १९३३ से होता है १९३४ में उन्होंने ‘निराला’ पर एक आलोचनात्मक आलेख लिखा, जो उनका पहला आलोचनात्मक लेख था। इसके बाद वे निरंतर सृजन की ओर उन्मुख रहे। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बाद डॉ॰ रामविलास शर्मा ही एक ऐसे आलोचक के रूप में स्थापित होते हैं, जो भाषा, साहित्य और समाज को एक साथ रखकर मूल्यांकन करते हैं।

विलास शर्मा ने धूल के महत्व का वर्णन किया है। हुए व्यक्ति हैं। आज के लोगों द्वारा धूल की लगती है। उनके अनुसार गाँव में, पहलवानों के लिए और बच्चों के लिए गोधूलि बहुत महत्वपूर्ण कि शहरों में लोग इस धूल को गंदगी मान कर इससे बचने का प्रयास करते हैं। लेखक को यह बात बुरी लगती है। इसलिए इस पाठ में लेखक ने धूल के महत्व, उसकी विशेषता और भारत के गाँवों में धूल की महिमा का वर्णन किया है। उन्होंने अलग-अलग उदाहरणों द्वारा यह बताने का प्रयास किया है कि धूल कितनी अमूल्य धरोहर है, हम भारतीयों के लिए। उन्होंने पूरे पाठ में हमारे जीवन में धूल की उपस्थिति का वर्णन किया है।

धूल

कक्षा नौवीं